

## मध्यप्रदेश के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का भौगोलिक अध्ययन

डा अजय तिवारी, भूगोल विभाग

शासकीय महाविद्यालय,

स्लीमनाबाद, कटनी (मध्यप्रदेश)

### शोध संक्षेप

धरती के प्रत्येक कोने में कहीं न कहीं प्राकृतिक आपदा आती रहती है। इन प्राकृतिक आपदाओं के निमंत्रण में मनुष्य भी जिम्मेदार है। आधुनिक विकासवादी सोच ने प्रकृति के संतुलन को नष्ट किया है, जिसके परिणामस्वरूप प्रकृति का प्रकोप सूखा, बाढ़, भू-स्खलन और भूकंप इत्यादि में दिखाई देता है। प्रस्तुत शोध पत्र में मध्यप्रदेश में बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का भौगोलिक अध्ययन किया गया है। साथ ही इससे रक्षा के उपाय भी बताये गए हैं।

### परिचय

बाढ़ एक प्राकृतिक आपदा है, जो हर वर्ष देश के विभिन्न भागों में आती हैं व व्यापक स्तर पर जन-धन की क्षति करती है। हाल ही में केदारनाथ में आयी बाढ़ त्रासदी इसके प्रमुख उदाहरण है इसके दुष्परिणामों के बचाव हेतु शासकीय तथा अशासकीय स्तर पर काफी प्रयास किये जाते हैं, किन्तु इसके बावजूद भी प्रतिवर्ष इसके भयावहता में वृद्धि हो रही है। जिसका मुख्य कारण प्राकृतिक कारकों के साथ आधुनिक मानवीय क्रिया है।

बाढ़ के कारण : किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र में अति वर्षा। समुचित जल - निकास का न होना। नदियों के किनारों का कटाव के कारण नदियों की जल ग्रहण क्षमता का घटना। भू-स्खलन के कारण नदियों के बहाव में रुकावट।

भूकम्प के कारण नदियों के बहाव की दिशा में परिवर्तन।

जल संग्रहण हेतु बांधों के निर्माण से वन विनाश

एवं बांधों का टूटने के कारण। आंधी के साथ-साथ तेज बारिश का होना। भारत के बाढ़ प्रभावित क्षेत्र - भारत के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों को चार भागों में बांटा जा सकता है।

1. ब्रह्मपुत्र क्षेत्र
2. गंगा क्षेत्र
3. उत्तर पश्चिम क्षेत्र
4. मध्य एवं दक्कन क्षेत्र

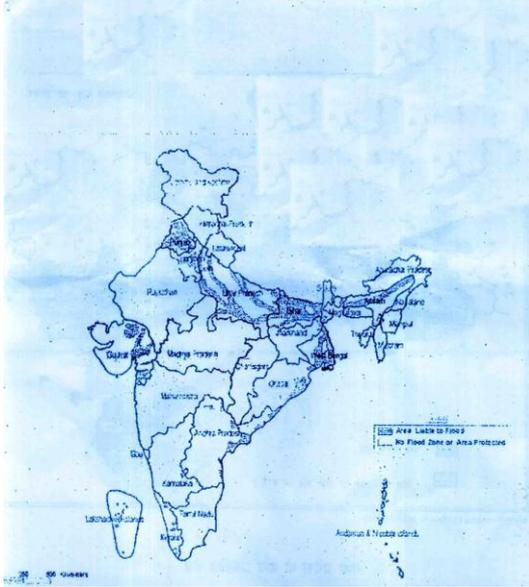
चित्र क्रमांक 1- भारत के बाढ़ प्रभावित क्षेत्र मध्यप्रदेश के बाढ़ प्रभावित क्षेत्र- मध्यप्रदेश के बाढ़ प्रभावित क्षेत्र मध्य एवं दक्कन क्षेत्र में आता है। बाढ़ के संदर्भ में मध्यप्रदेश को सात प्रमुख नदी-भागों में बांटा जा सकता है। चम्बल/वेतवा, गंगा, महानदी, गोदावरी, ताप्ती, नर्मदा व माही।

शासकीय स्तर पर मध्यप्रदेश को बाढ़ प्रभावित राज्यों की श्रेणी में नहीं रखा गया है किन्तु अध्ययनों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर मध्यप्रदेश के 50 जिलों में से निम्नलिखित 19 जिलों को आंशिक रूप से बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में



रखा गया है ।  
1. मण्डला, 2. जबलपुर, 3. नरसिंहपुर, 4. होशंगाबाद, 5. रायसेन, 6. खण्डवा, 7. खरगोन, 8. देवास, 9. उज्जैन, 10. मंदसौर, 11. इन्दौर, 12. धार, 13. सिहोर, 14. भोपाल, 15. विदिशा, 16. राजगढ़, 17. दमोह, 18. सतना, 19. रीवा  
चित्र क्रमांक 2 म.प्र. के बाढ़ प्रभावित जिले बाढ़ का सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पर प्रभाव -  
बाढ़ का व्यापक प्रभाव फसलों, बस्तियों तथा मवेशियों पर पड़ता है । बाढ़ का प्रभाव लाभकारी व हानिकारक दोनों ही रूपों में होता है । जहां एक तरफ बाढ़ अपने साथ उपजाऊ मिट्टी लेकर खेतों में उपजाऊ मिट्टी की एक परत बना देती है । वहीं दूसरी तरफ खेतों की अनुपजाऊ मिट्टी अपने साथ बहा ले जाती है । निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि बाढ़ से लाभ कम तथा हानि अधिक होती है । बाढ़ का प्रमुख प्रभाव है।  
जान-माल की हानि  
बाढ़ के बाद फैलने वाले रोगों का खतरा  
फसलों एवं भवनों की क्षति  
अधोसंरचनात्मक सुविधाओं की क्षति  
संचार व्यवस्था का नष्ट होना  
आवागमन के साधनों का अवरूद्ध होना  
बाजार-व्यवस्था में व्यवधान  
अल्पकालीन पलायन  
औद्योगिक उत्पादन पर प्रभाव  
जन समुदाय में डर व्याप्त होना।  
कानून व्यवस्था प्रभावित होना  
बाढ़ के हानिकारक प्रभाव को बढ़ाने वाले कारक -पूर्व तैयारी न होना तथा अनियोजित कार्यवाही  
प्रभावित क्षेत्रों, विशेषकर सुदूर ग्रामों में सही समय पर चेतावनी न पहुंचना

बाढ़ से प्रभावित होने वाले कुल क्षेत्रों के बारे में सही जानकारी न होना  
स्थानीय प्रशासन का प्रभावित क्षेत्रों से तत्काल सम्पर्क न होना  
शासकीय विभागों व अशासकीय संगठनों के साथ समुचित समन्वय न होना  
बाढ़ प्रबंधन के उपाय -  
बाढ़ पुनरावृत्ति के आधार पर क्षेत्रों की पहचान  
बाढ़ क्षेत्र के मानचित्र को स्टेशन, सड़क, गांव में प्रदर्शित करना  
वर्षा के समय जल स्तर का निरीक्षण करना तथा इसका प्रसारण रेडियो, टीवी या वायरलेस द्वारा प्रसारित कराना  
प्राप्त चेतावनी के साथ कार्य तंत्र की त्वरित प्रतिक्रिया सुनिश्चित करना  
प्रभावी रूप से नियंत्रण एवं मूल्यांकन करने हेतु स्पष्ट कार्य तंत्र एवं जिम्मेदारी का निर्धारण  
जिला आपदा नियंत्रण प्रकोष्ठ की स्थापना  
ग्राम स्तरीय बाढ़ समिति का गठन  
बाढ़ प्रबंधन के दीर्घकालीन उपाय-  
(अ) संरचनात्मक उपाय-  
तटबन्ध  
जलाशय  
बेहतर जल निकासी (ड्रेनेज)  
बाढ़ के पानी का दिशा परिवर्तन  
वाटर शेड निर्माण  
(ब) गौर संरचनात्मक उपाय-  
बाढ़ के मैदानी इलाकों का प्रबंधन  
बाढ़ का पूर्वानुमान, चेतावनी व उससे निपटने की तैयारी  
(स) अन्य उपाय-  
राहत व पुनर्वास  
बाढ़ बीमा आदि



चित्र क्रमांक 1 – भारत के बाढ़ प्रभावित क्षेत्र



चित्र क्रमांक 2 – म.प्र. के बाढ़ प्रभावित जिले

#### निष्कर्ष-

बाढ़ एक प्राकृतिक आपदा है, जिसका कोई पूर्वानुमान नहीं होता अतः इसके बचाव की सार्थक पहल करके इसके प्रभाव को कम किया जा सकता है। इसके लिए ग्राम स्तरीय

विकासखण्ड स्तरीय एवं जिला स्तरीय बाढ़ समितियों का गठन कर समिति के प्रत्येक सदस्य को “आपदा प्रबंधन” का प्रशिक्षण प्रदान दिया जाना चाहिए।